Self Checking

14-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

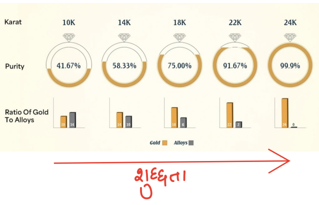

"मीठे बच्चे - रोज़ अपने आपसे पूछो कि "मैं आत्मा कितना शुद्ध बना हूँ," जितना शुद्ध बनेंगे उतना ① खुशी रहेगी, ② सेवा करने का उमंग आयेगा"

प्रश्नः- हीरे जैसा श्रेष्ठ बनने का पुरुषार्थ क्या है?

उत्तर:- देही-अभिमानी बनो, शरीर में जरा भी मोह न रहे। Most imp फिकर से फारिग हो एक बाबा की याद में रहो - यही श्रेष्ठ पुरुषार्थ हीरे जैसा बना देगा। अगर देह-अभिमान है तो समझो अवस्था कच्ची है। Mind very well... बाबा से दूर हो। तुम्हें इस शरीर की सम्भाल भी करनी है क्योंकि इस शरीर में रहते कर्मातीत अवस्था को पाना है।

गीत:-मुखड़ा देख ले प्राणी... Click

मुखड़ा देख ले, देख ले
मुखड़ा देख ले प्राणी ज़रा दर्पण में हो
देख ले कितना पुण्य है कितना पाप तेरे जीवन में
देख ले दर्पण में
मुखड़ा देख ले प्राणी ज़रा दर्पण में

कभी तो पल भर सोच ले प्राणी, क्या है तेरी करम कहानी
कभी तो पल भर सोच ले प्राणी, क्या है तेरी करम कहानी
पता लगा ले
पता लगा ले पड़े हैं कितने दाग तेरे दामन में
देख ले दर्पण में
मुखड़ा देख ले प्राणी ज़रा दर्पण में

खुद को धोखा दे मत बन्दे, अच्छे ना होते कपट के धन्ये
खुद को धोखा दे मत बन्दे, अच्छे ना होते कपट के धन्ये
सदा ना चलता
सदा ना चलता किसी का नाटक दुनिया के आँगन में
देख ले दर्पण में
मुखड़ा देख ले प्राणी ज़रा दर्पण में

देख ले कितना पुण्य है कितना पाप तेरे जीवन में
देख ले दर्पण में
मुखड़ा देख ले प्राणी ज़रा दर्पण में

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

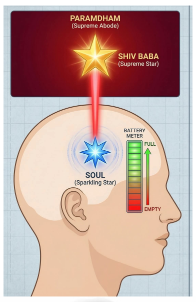

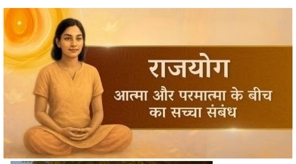

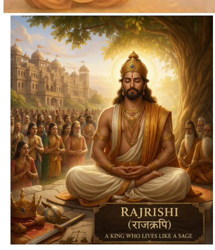

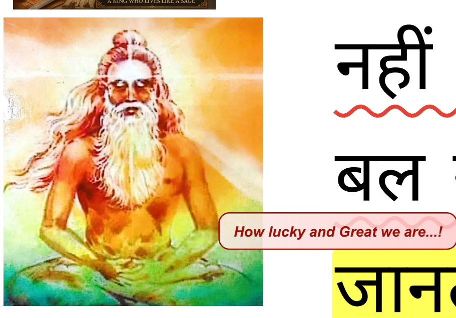

ओम् शान्ति। बाप बच्चों को समझाते हैं कि जिसके योगबल से पाप कटते हैं, उनको खुशी का पारा चढ़ जाता है। अपनी अवस्था को आपेही बच्चे जान सकते हैं। जब अवस्था अच्छी होती है तो सर्विस का शौक बहुत अच्छा होता है। जितना-जितना शुद्ध होते जायेंगे उतना औरों को भी शुद्ध अथवा योगी बनाने का उमंग आयेगा क्योंकि तुम राजयोगी वा राजऋषि हो। हठयोग ऋषि तत्व को भगवान मानते हैं। राजयोग ऋषि भगवान को बाप मानते हैं। तत्व को याद करने से उन्हों के कोई पाप नहीं कटते हैं। तत्व के साथ योग लगाने से कोई बल नहीं मिलता है। कोई भी धर्म वाले योग को जानते नहीं हैं इसलिए कोई भी सच्चा योगी बन वापिस नहीं जा सकते। अभी तुम बच्चे अपनी अवस्था खुद भी जान सकते हो। आत्मा जितना बाप को याद करेगी उतना खुशी होगी। अपनी जांच रखनी है। बच्चे भी एक दो की अवस्था को, अपनी अवस्था को जान सकते हैं। देखना है हमारा कोई शरीर में भान तो नहीं है! देह-अभिमान है तो समझो हम बहुत कच्चे हैं। बाबा से बहुत दूर

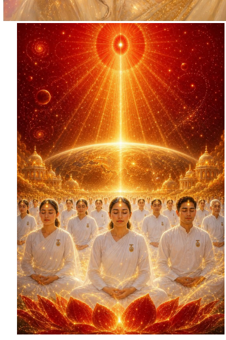

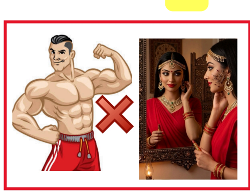

ints: ज्ञान Litmus Test M.imp.

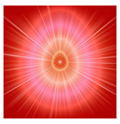

हैं। बाप फरमान करते हैं बच्चे तुम्हें अब हीरे जैसा बनना है। बाप देही-अभिमानी बनाते हैं। बाप को देह-अभिमान होता नहीं। देह-अभिमान होता है बच्चों को। बाप की याद से तुम देही-अभिमानी बनेंगे। अपनी जांच करते रहो, हम कितना समय याद करते हैं। जितना याद करेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ेगा और अपने को लायक बनायेंगे। ऐसे भी मत समझना कि कोई बच्चे कर्मातीत अवस्था को पहुँच गये हैं। नहीं, रेस चल रही है। रेस जब पूरी होगी तब फाइनल रिजल्ट होगी। फिर विनाश भी शुरू हो जायेगा। तब तक यह रिहर्सल होती रहेगी जब तक कर्मातीत अवस्था आ जाए। हम किसी की बुराई नहीं कर सकते। अन्त में ही सबका पता पड़ेगा। अभी तो थोड़ा टाइम पड़ा है। यह दादा भी कहते हैं मीठे बच्चे, अभी थोड़ा समय पड़ा है। इस समय एक भी कर्मातीत अवस्था को पा न सके। बीमारी आदि होती है - इसको कर्मभोग कहा जाता है। भोगना का और किसको पता नहीं पड़ता है। वह अन्दर की पीड़ा होती है।

Mind very well...

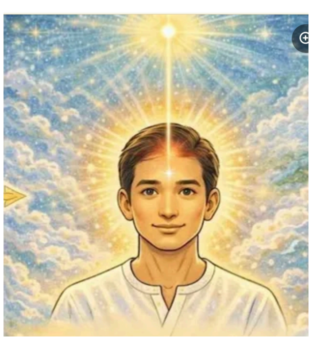

Please... समय रहते जाग जाओ...

Attention..! अभी गफलत में ना रहना, ये बाते मीठे बाबा ने 1969 से पहले कही थी

14-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अभी एकरस अवस्था किसी की बनी नहीं है। जितनी कोशिश करते हैं उतना विकल्प, तूफान बहुत आते हैं। तो बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए। विश्व का मालिक बनना कोई कम बात है क्या? मनुष्य साहूकार हैं बड़े-बड़े बंगले हैं, तो खुशी रहती है क्योंकि सुख बहुत है। अभी भी तुम बाप से अथाह सुख लेते हो। जानते हो बाबा से हम राजाई लेंगे। शान्ति में इतना खुशी नहीं होती, जितनी धन में खुशी होती है। संन्यासी घरबार छोड़ जाए जंगल में रहते थे। कभी पैसा हाथ में नहीं रखते थे, सिर्फ रोटी लेते थे। अभी तो कितने धनवान हो गये हैं। सबको पैसे की चिंता बहुत है। वास्तव में राजा को प्रजा का ओना रहता है इसलिए लड़ाई का सामान रखते हैं। सतयुग में तो लड़ाई आदि की बात होती नहीं। अभी तुम बच्चों को खुशी होती है - हम अपनी राजाई में जाते हैं। वहाँ डर की कोई बात नहीं होती। टैक्स आदि की बात नहीं। यह शरीर की फिकरात यहाँ रहती है। गाया जाता है फिकर से फारिग स्वामी... तुम जानते हो फिकर से फारिग होने के लिए अभी हम

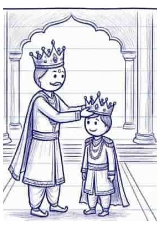

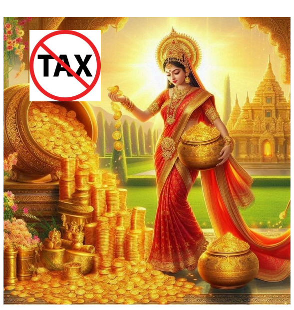

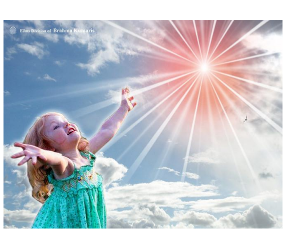

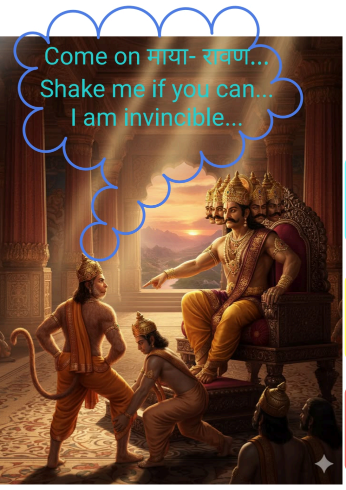

इतना पुरुषार्थ करते हैं। फिर 21 जन्म लिए कोई फिकरात नहीं रहेगी। बाबा को याद करने से तुम बहुत अडोल रहेंगे। रामायण की कथा भी तुम्हारे पर है। चढ़ाओ नशा... तुम ही महावीर बनते हो। आत्मा कहती है हमको रावण हिला नहीं सकता। very Coming soon... वह अवस्था पिछाड़ी को आयेगी। अभी तो कोई भी हिल जायेंगे। फिकरात रहेगी। जब विश्व में लड़ाई लगेगी तब समझेंगे अब टाइम आ गया है। जितना बाप को याद करने का पुरुषार्थ करेंगे उतना फायदा होगा। अभी नहीं तो कभी नहीं पुरुषार्थ करने का अभी ही समय है। फिर तो विनाश की धूमधाम होगी। अभी तो शरीर में भी मोह रहता है ना। बाबा खुद कहते हैं शरीर की सम्भाल रखो। अन्तिम शरीर है, इसमें ही पुरुषार्थ कर कर्मातीत अवस्था को पाना है। जीते रहेंगे, बाप को याद करते रहेंगे। बाप समझाते हैं बच्चे जीते रहो। जितना जियेंगे उतना बाप को याद कर ऊंच वर्सा लेंगे। अभी तुम्हारी कमाई होती रहती है। शरीर को निरोगी तन्दरूस्त रखो, ग़फलत नहीं करनी है। खान-पान की सम्भाल रखेंगे तो कुछ नहीं होगा। एकरस चलन से शरीर भी तन्दरूस्त

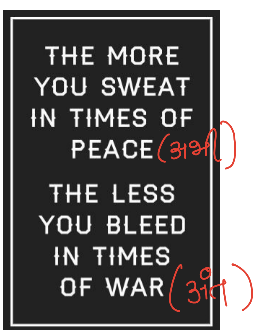

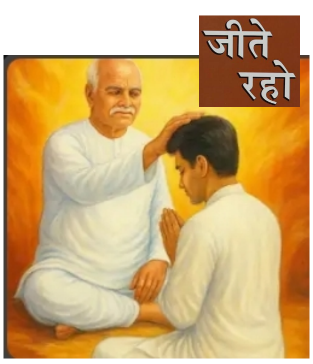

रहेगा। यह अमूल्य तन है। इसमें पुरुषार्थ कर देवी-देवता बनते हो तो बलिहारी इस समय की है। खुशी रहनी चाहिए। जितना बाप और वर्से को याद करेंगे उतना नारायणी नशा चढ़ा रहेगा। बाप की याद से ही तुम ऊंच ते ऊंच पद पायेंगे। देखना है हम कितना खुशी में, कितना फखुर में रहते हैं।

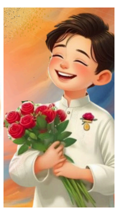

Self Checking

गरीबों को तो और ही खुशी रहनी चाहिए।

साहूकारों को तो धन का फिकर रहता है। तुम्हारे में कुमारियों को तो कोई फिकर नहीं है। हाँ कोई के मित्र-सम्बन्धी गरीब हैं, तो सम्भाल रखनी पड़ती है। जगाते भी रहना है। अगर नहीं जगते हैं तो फिर कहाँ तक मदद करते रहेंगे। बाबा कहते हैं ना - तुम सर्विसएबुल खुद बनो वा स्त्री को रूहानी सर्विस में दो।

इस विराट ड्रामा के सभी पार्ट टेस्ट लेने वाले बने हुए हैं। इस खेल को चलाने वाला अगर चाहे तो एक सेकण्ड में इस ड्रामे को ड्राप कर फिर नये सिरे से शुरू कर देवे, परन्तु करता नहीं है क्योंकि ईश्वर को भी इस साधारण रीति से कर्तव्य चलाना पड़ता है। स्वयं सर्वशक्तिवान निराकार ईश्वर साकार में है परन्तु साधारण वेष में! यही तो

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 9

हे राधे बेटी, तुम मेरा जलवा देखना चाहती हो! मैं चाहूं तो एक सेकण्ड में विनाश करा सकता हूँ। परन्तु करता नहीं हूँ क्योंकि विराट फिल्म अनुसार

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 8

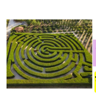

24-06-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "मातेश्वरी" मधुबन

भूलभुलैया का खेल है, जिसको जो जाने वह जानी जाननहार।

24-06-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "मातेश्वरी" मधुबन

जो जो कर्तव्य जिस जिस द्वारा जैसे प्ले होने हैं, वह अवश्य प्ले होंगे। अव्यक्त प्रभू अनादि कायदे

Despite of World Almighty,
How Humble My baba is...!

चढ़ाओ नशा...

तुम हो बाबा के मददगार। मदद तो सबको चाहिए ना। अकेला बाप भी क्या करेगा, कितनों को मन्त्र दे! हम तुमको देते हैं - तुमको फिर औरों को देना है,

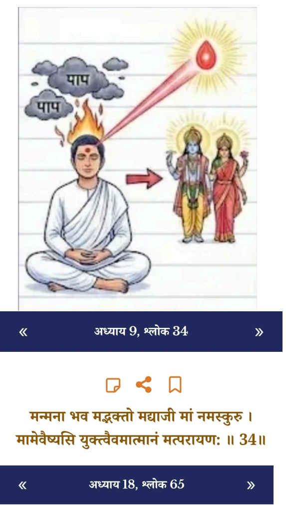

कलम लगाना है। बच्चों को कहते रहते हैं जितना हो सके मददगार बनो, मन्त्र देते जाओ। तुम्हारे शास्त्रों में भी है कि सबको पैगाम दिया था कि बाप आये हैं वर्सा लेना है तो बाप को याद करो। देहधारियों को याद नहीं करो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और वर्सा मिल जायेगा। गीता तो बहुत सुनते सुनाते हैं। उसमें प्रसिद्ध अक्षर है मनमनाभव। बाप को याद करो तो मुक्ति को पायेंगे। संन्यासी भी यह पसन्द करेंगे। मध्याजी भव अर्थात् जीवनमुक्ति। बच्चे बाप के बनते हैं तो बाप कहते हैं - बच्चे तुम्हारी आत्मा पतित है, पतित चल नहीं सकेंगे। यह समझने की बातें हैं। तुम भारतवासी सतोप्रधान थे, तमोप्रधान बने अब फिर सतोप्रधान बनना है तो बाप कहते हैं पुरुषार्थ करो तो ऊंच पद मिलेगा। भक्ति तो जन्म-जन्मान्तर करते आये हो। तुम जानते हो - पहले-पहले अव्यभिचारी भक्ति शुरू हुई। अभी कितनी व्यभिचारी भक्ति है। शरीरों की भी पूजा होती है, वह है भूत पूजा। देवतायें फिर भी पवित्र हैं। परन्तु इस समय तो सब

ये पक्का समझ लो..

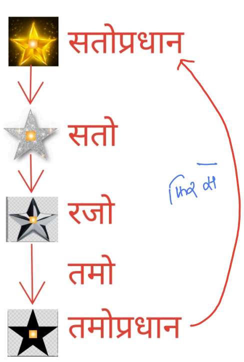

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

तमोप्रधान हैं। तो पूजा भी तमोप्रधान होती जाती है। अभी बाप को याद करना है। भक्ति का अक्षर कोई नहीं बोलना है। हाय राम - यह भी भक्ति का अक्षर है। ऐसे कोई पुकार नहीं करनी है। इसमें कुछ भी उच्चारण करने की बात नहीं। ओम् शान्ति भी घड़ी-घड़ी नहीं कहना है। शान्ति माना अहम् आत्मा शान्त स्वरूप हैं। सो तो हैं ही। इसमें बोलने की बात नहीं रहती। दूसरे कोई मनुष्य को कहेंगे ओम् शान्ति, वह तो अर्थ जरा भी नहीं समझेंगे। वो लोग तो ओम् की बड़ी-बड़ी महिमा करते हैं। तुम तो अर्थ समझते हो फिर ओम् शान्ति कहना भी फालतू है। हाँ एक दो से ऐसे पूछ सकते हो - शिवबाबा की याद में हो? जैसे हम भी बच्ची से पूछता हूँ यह किसका श्रृंगार करती हो? बोलती है शिवबाबा के रथ का। यह शिवबाबा का रथ है ना। जैसे हुसैन का रथ होता है ना। घोड़े को श्रृंगार करते हैं। घोड़े का अर्थ नहीं समझते हैं। धर्म स्थापन करने वाले जो आते हैं उनकी आत्मायें पवित्र होती हैं। पुरानी पतित आत्मा धर्म स्थापन कर न सके। तुम धर्म स्थापन नहीं करते हो,

Only God can say this...

बाबा किसी भी बात में फंसने नहीं देते।

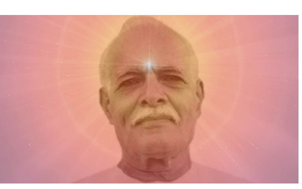

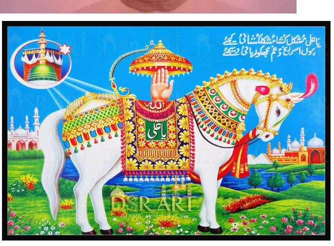

m.m.m....imp.

ये पक्का समझ लो..

योग धारणा सेवा M.imp.

नाज उठाते हमें बिठाते, आप तो अपने कंधों पर
याद-प्यार दे करते नमस्ते, बली-बली जाते बच्चों पर
ऐसे प्यार का मधुरस पी के, सब रस लगते फीके हैं
मीठे बच्चे मीठे बच्चे बोल ये कितने मीठे है
मीठा हमे बनाते बाबा, आप बड़े ही मीठे है

14-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

शिवबाबा तुम्हारे द्वारा करते हैं। तुमको पवित्र बनाते हैं। वो लोग भक्ति मार्ग में बहुत श्रृंगार आदि करते हैं। यहाँ श्रृंगार पसन्द नहीं करते। बाप कितना निरहंकारी है। खुद कहते हैं हम बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में आता हूँ। पहले सतयुग में होगा श्री नारायण। श्री लक्ष्मी से भी

Point to be Noted

पहले श्री नारायण आयेगा। वह तो बड़ा होगा ना इसलिए श्रीकृष्ण का नाम गाया हुआ है। श्रीनारायण से भी श्रीकृष्ण की महिमा जास्ती करते हैं। श्रीकृष्ण की ही जन्माष्टमी मनाते हैं। श्री नारायण का बर्थ डे नहीं मनाते। यह कोई नहीं जानते कि श्रीकृष्ण सो श्रीनारायण। नाम तो बचपन का ही चलेगा ना। फलाने ने जन्म लिया, उसका बर्थ डे मनाते हैं इसलिए श्रीकृष्ण का ही मनाते हैं। श्रीनारायण का किसको पता नहीं। पहले-पहले शिवजयन्ती फिर है श्रीकृष्ण जयन्ती फिर राम की... शिव के साथ गीता का भी जन्म होता है। शिवबाबा आते ही हैं बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में। बुजुर्ग अनुभवी रथ में ही आते हैं। कितना अच्छा समझाया हुआ है, तो भी किसकी

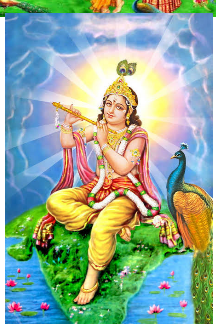

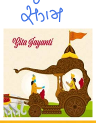

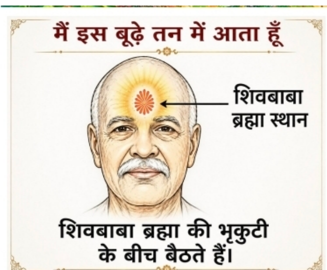

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

बुद्धि में नहीं आता।

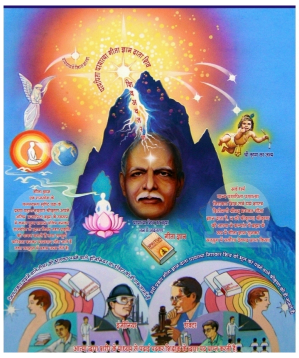

बाप कहते यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। जब मैं आकर सुनाऊं तब तुम भी सुना सकते हो। अभी तुम बच्चे जानते हो हम भविष्य में एक्यूरेट यह (देवी-देवता) बनेंगे। बाबा ने 2-3 प्रकार के साक्षात्कार किये थे। यह बनूँगा, ताज वाला बनूँगा, पगड़ी वाला बनूँगा। 2-4 राजाई के जन्मों का साक्षात्कार किया था। अभी तुम समझ सकते हो - इन बातों को दुनिया में और कोई समझ नहीं सकते। हाँ, इतना समझते हैं अच्छा कर्म करेंगे तो अच्छा जन्म मिलेगा। अभी तुम पुरुषार्थ ही भविष्य के लिए कर रहे हो। नर से नारायण बनने का। तुम जानते हो - हम यह पद पायेंगे। यह खुशी जास्ती उनको रहेगी जो कर्मातीत अवस्था को पाने का पुरुषार्थ करते रहते होंगे। कहते हैं बाबा हम तो मम्मा बाबा को फालो करेंगे तब तो तख्त पर बैठ सकेंगे। यह भी समझ चाहिए, कितनी हम सर्विस

चढ़ाओ नशा...

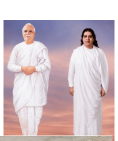

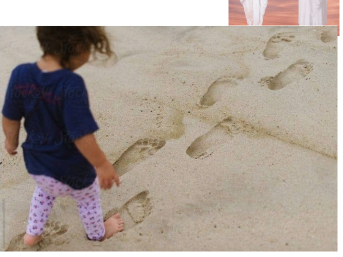

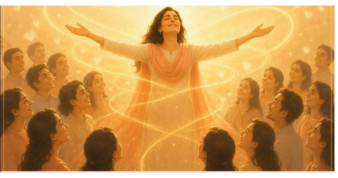

करते हैं और कितना खुशी में रहते हैं। खुद खुशी में रहेंगे तो दूसरों को भी खुशी में लायेंगे। अन्दर कोई खराबी होगी तो दिल खाती रहेगी। कोई-कोई आकर कहते हैं - बाबा हमारे में क्रोध है। यह भूत है हमारे में। फिकर की बात हुई ना। भूत को रहने नहीं देना चाहिए। क्रोध क्यों करें! प्यार से समझाना होता है। बाबा कोई पर क्रोध थोड़ेही करेंगे। शिवबाबा की महिमा है ना। बहुत फालतू झूठी महिमा भी करते हैं। मैं करता क्या हूँ! मुझे कहते हैं आकर पतित से पावन बनाओ। जैसे डॉक्टर को कहते हैं हमारी बीमारी दूर करो। वह दवाई दे इन्जेक्शन लगाते हैं, सो तो उनका काम ही है। बड़ी बात थोड़ेही है। पढ़ते ही हैं सर्विस के लिए। जास्ती पढ़ते हैं तो जास्ती कमाई करते हैं। बाप को तो कोई कमाई नहीं करनी है। उनको तो कमाई कराना है। बाबा कहते मुझे तुम अविनाशी सर्जन भी कहते हो, यह जास्ती महिमा कर दी है। पतित-पावन को कोई सर्जन नहीं कहा जाता। यह सिर्फ महिमा है। बाप तो सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बस। मेरा पार्ट

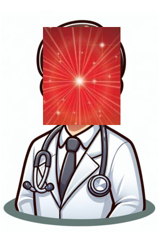

How Sweet...!

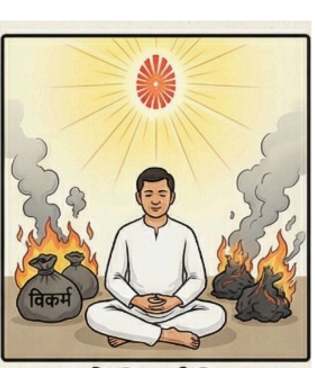

याद से विकर्म विनाश।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

14-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

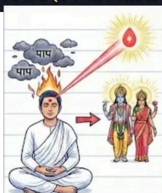

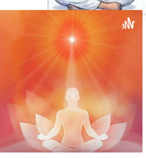

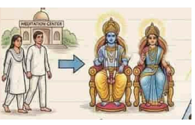

ही है तुमको यह समझाने का कि मामेकम् याद करो, जितना याद करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। यह है ही राजयोग का ज्ञान। गीता जिन्होंने पढ़ी है, उनको समझाना सहज होता है। तुम पूज्य राजाओं के राजा बनते हो, फिर पुजारी बनेंगे। तुमको मेहनत करनी है। तुम विश्व को पवित्र बनाते हो। कितना भारी मर्तबा है। तुम सब अंगुली देते हो - कलियुगी पहाड़ को पलटाने। बाकी पहाड़ आदि कुछ भी है नहीं। अब तुम जानते हो - नई दुनिया आनी है, इसलिए राजयोग जरूर सीखना है। बाप ही आकर सिखलाते हैं। सतोप्रधान बनना है। जो कल्प पहले बने होंगे उनको समझाने से जंचेगा। बात तो ठीक कहते हैं। बरोबर बाप ने कहा था - मनमनाभव। अक्षर संस्कृत है। बाप तो हिन्दी में कहते हैं मुझे याद करो। अभी तुम समझते हो हम कितने ऊंच धर्म, ऊंच कर्म वाले थे तब तो गायन है 16 कला... अब फिर ऐसा बनना है। अपने को देखना है "कहाँ तक हम सतोप्रधान बने हैं, पावन बने हैं। कहाँ तक नर्कवासियों को स्वर्गवासी बनाने की सेवा करते हैं।" अच्छा!

Points: ज्ञान योग धारणा imp.

14-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) बाप समान निरहंकारी बनना है। इस शरीर की सम्भाल करते हुए शिवबाबा को याद करना है। रूहानी सर्विस में बाप का मददगार बनना है।

2) अन्दर में कोई भी भूत को रहने नहीं देना है। कभी किसी पर क्रोध नहीं करना है। सबसे बहुत प्यार से चलना है। मात-पिता को फालो कर तख्तनशीन बनना है।

Points: ज्ञान योग ध

Method/Process/Instrument

14-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- स्वार्थ शब्द के अर्थ को जान सदा एकरस स्थिति में स्थित होने वाले सहज पुरुषार्थी भव

Outcome/Output/Result Finale Achievement

आजकल एक दो में जो लगाव है वह स्नेह से नहीं लेकिन स्वार्थ से है।

Point to be Noted

स्वार्थ के कारण लगाव है और लगाव के कारण न्यारे नहीं बन सकते इसलिए

स्वार्थ शब्द के अर्थ में स्थित हो जाओ अर्थात् पहले स्व के रथ को स्वाहा करो।

यह स्वार्थ गया तो न्यारे बन ही जायेंगे।

इस एक शब्द के अर्थ को जानने से सदा एक के और एकरस बन जायेंगे, यही सहज पुरुषार्थ है।

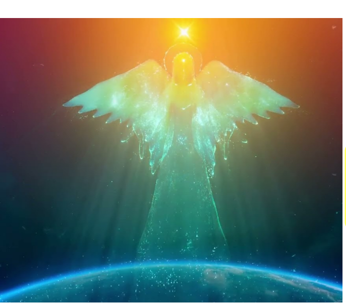

स्लोगन:-फरिश्ता रूप में रहने से कोई भी विघ्न अपना प्रभाव डाल नहीं सकता।

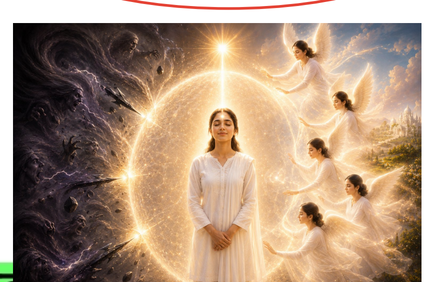

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा

14-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

सम्पूर्ण पवित्रता आप ब्राह्मणों का श्रृंगार है, सदा श्रृंगार की हुई मूर्त आर्थात् सदा पवित्र स्वरूप में स्थित रह बेहद की स्टेज पर हीरो पार्ट बजाओ।

Definition of सदा ब्रह्मचारी अर्थात् संकल्प में भी (*Even in a Thought*) किसी प्रकार की अपवित्रता वृत्ति को चंचल नहीं बनाये।

वृत्ति की चंचलता भी रज़िस्टर को दागी बना देती है - इसलिए वृत्ति से भी सदा ब्रह्मचारी बनो।

Very Subtle Point to understand

Most imp

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans July 26 → Click

All अव्यक्त इशारे July 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

(आ) मुख्य सब्जेक्ट है ही 'याद' की। बाप-दादा अमृतवेले जब चक्र लगाते हैं तो थोड़ा पॉवरफुल वायब्रेशन्स की कमी दिखाई देती है। नेमीनाथ तो बन जाते हैं, लेकिन अनुभवीमूर्त बनो। नियम प्रमाण तो जबरदस्ती हो गया ना! अगर अनुभव हो गया, तो अपनी लगन में बैठेंगे। जिस बात का अनुभव होता है तो, न चाहते भी वह बात अपनी तरफ खींचती है। जैसे (Example) वाचा सर्विस से खुशी का अनुभव होता है तो, न चाहते भी उस तरफ दौड़ते हो ना! ऐसे ही अमृतवेले को पॉवरफुल बनाओ जिससे मनसा सेवा का अनुभव बढ़ा सकेंगे। लास्ट में वाचा सेवा का चान्स नहीं होगा। मनसा सेवा पर सर्टीफिकेट मिलेगा।

May I have your Attention Please..!

Method/Process/Instrument — Outcome/Output/Result

29-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- मनन द्वारा बाप की प्रापर्टी को अपनी प्रापर्टी बनाने वाले दिव्य बुद्धिवान भव

Finale Achievement

बाप द्वारा जो भी खजाना मिलता है, उसे मनन करो तो अन्दर समाता जायेगा। प्रापर्टी तो सबको एक जैसी मिली हुई है लेकिन (Here is the Difference) जो मनन करके उसे अपना बनाते हैं, उन्हें उसका नशा और खुशी रहती है इसलिए कहा जाता है - अपनी घोट तो नशा चढ़े। *m.m.m....imp.*

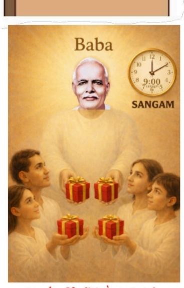

Equal opportunity For All

जो मनन की मस्ती में सदा मस्त रहते हैं उन्हें (Advantages) दुनिया की कोई भी चीज़, उलझन आकर्षित नहीं कर सकती। उन्हें दिव्य बुद्धि का वरदान स्वत: मिल जाता है।